

M. T. R. COLLEGE, SURAT

*Manuscripts Library*

No. <sup>Ref.</sup>  
<sup>Sec.</sup> 703 C

Title: Siddhant Kaumudi



703  
C

सिद्धान्त कौमुदी- Incomplete

: Siddhānta Kaumudī		: Title
:	: Bhatṭoji Dixit	: Author
:	:	: Editor
:	:	: Year, Vols.
:	:	: Publisher
703 <sup>c</sup>	: Begins & ends abruptly	: Remarks



को. पू.  
२४

अमुयोः। अमृषां। अमृष्यां। अमृषु॥ ॥ इति हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः॥ ॥ स्वमोर्लुक्। दत्वं। स्वनङ्। स्वनङ्। चतुरनङ्। होरित्यामा।  
स्वनङ्। हि। पुनस्तङ्। दिवङ्। विमलङ्। अहङ्। अंतर्वर्तिनी। विभक्तिमाश्रित्य पूर्वपदस्योच्तरपदस्यापि पदसंज्ञायां प्रा-  
सायां। उत्तरपदत्वेनापदादिविधौ प्रतिषेध इति प्रत्ययलक्षणं न। विमलदिवि। अयदादिविधोक्। दधिसेचो। इहपत्न-  
निषेधे कर्तव्ये पदत्वमस्येव। कुत्वेत्तु न। वाः। वारी। वारि। असलंतत्वा ननु मत्। चत्वारि। ननु मनेतिका। देशेन। किं। के।  
कानि। इदं। इमे। इमानि। अन्वादेशेन पुंसके एनङ्कृत्यः। एनत्। एने। एनानि। एनेन। एनयोः॥ ब्रह्म। ब्रह्मणी। ब्रह्मा-  
णि। हे ब्रह्मन्। हे ब्रह्म। रोसुपि। अहर्भाति। विभाषादिभ्योः। अङ्गी। अहनी। अहानि। अहन्। अहन्नि त्यस्य रुस्यात्  
पदांते। अहोभ्यां। अहोभिः। इह अहः। अहोभ्यामित्यादौ रत्व रत्वयोरसिद्धत्वा नलोपे प्राप्ते। अहन्नि त्यावर्त्तमानलो-  
पा भवं निपात्य द्वितीयेन रुर्विधेयः। तदंतस्यापिरुत्वरत्वे। दीर्घाण्यहानियस्मिन् सदीर्घाहाः निदाघः। इह हल्  
आदिलोपे प्रत्ययलक्षणेनासुपीति निषेधाद्वाभावेरुः। तस्यासिद्धत्वा न्नान्तलक्षण उपधादीर्घः संबुद्धो नुहरी

२४

र्घो हो निदाघः। दीर्घाहानो। दीर्घाहानः। दंडि। दंडिनी। दंडीनि। स्रग्वि। स्रग्विणी। स्रग्वीणि। वाग्मि। वाग्मिनी। वाग्मीनि। बहुवृ-  
ह। बहुवृत्रघ्नी। बहुवृत्रहणी। बहुवृत्रहाणि। बहुपूषाणि। बहुर्षमाणि। बहुवर्षाणि। असृजः पदांते कुलंसृजेः द्विनो वि-  
धानात्। विश्वसृडादौ न। सृजिदृशोरिति सूत्रे रज्जुसृज्यामिति भाष्यप्रयोगात्। यद्वा। ब्रश्वादि सूत्रे सृजियज्योः  
पदांते षत्वं कुत्वापवादः। सृगृत्विकुशब्दयोस्तु निपातनादेव कुत्वं। असृकृशब्दस्तु अस्य ते रौणादिके रज्जुप्रत्य-  
ये बोध्यः। असृक्। असृगृ। असृजी। असृजि। पदन्तिनिवा असन्। असानि। असृजा। असृजा। असृग्यामि-  
त्यादि। ऊर्क्। ऊर्गृ। ऊर्जी। ऊर्जि। नरजानां संयोगः। बहुर्जि। नुमप्रतिषेधः। अंत्यात्पूर्वोवा नुमत्। बहुर्जि।  
बहुर्जिवाकुलानि। त्यत्। त्यद्व्ये। त्यानि। तत्। ते। तानि। यत्। ये। यानि। एतत्। एते। एतानि। अन्वादेशेन। एनत्  
एने। एनानि। वेमिद्यतेक्विप्। वेमित्। वेमिद्। वेमिदी। शौ अलोपस्य स्त्वनिवत्वात्। असलंतत्वा ननु स्वविधोस्तानि  
वत्वाभावात्। वेमिदि। ब्राह्मणकुलानि। वेच्छिदि। गवाकृशब्दस्य रूपानि कुवेर्वागतिभेदतः। असंध्यवङ् पूर्वस्येन



को. पू.  
२५

वाधिकशतमंतं। स्वमसुस्सुनवषड् भादोषः केस्युस्त्रीणिजशशसोः। चत्वारिंशेपेदशकेरुपाणीतिविभावय। तथाहि। गामंचती  
तिविग्रहेस्त्रिणादिनाक्विन्। गतौनलोपः। अवड्। स्पेदायनस्येत्यवड्। गवाक्। गवाग्र। सर्वत्रविभाषेतिप्रकृतिभावो। गोअ  
क्। गोअग्र। पूर्वस्येगोक्। गोग्र। पूजायांनस्यकुत्वेनडः। गवाड्। गोड्। गोडः। गोअड्। अम्ययेतान्येवनव। ओडः। शी  
भत्वाहवड्। लोपः। गोवी। पूजायांतु। गवांची। गोअंची। गोअ्वी। जः। शः। सौः। शिः। शोः। सर्वेनामस्थानत्वान्नुम्। ग  
वांवि। गोअ्वि। गोअज्वि। गतिपूजनयोस्त्रीण्येव। गोवा। गवांवा। गोअंवा। गोअ्व्वा। गवाभ्यां। गोअभ्यां। गोअभ्यां। गवा  
भ्यामित्यादि। सुपितु। उतानांपक्षेङ्कोः। कुगितिकुक्। गवांश्चु। गवाश्चु। नचेहचयोद्वितीयाइतिपक्षेककारस्यस्वकारेण  
षण्णामाधिक्यंशक्यं। चर्त्तस्यासिद्धत्वात्। कुक्पक्षेननस्यासिद्धत्वात्। जश्त्वाभावेपक्षेद्वितीयादेशात्रीणिरुपाणिव  
र्द्धतएव। ऊह्यमेषां द्विर्वचनानुनासिकविकल्पनात्। रूपाण्यश्वाक्षिभूतानि ५२०। पर्वतीतिमनीषिणिः॥  
तिर्यक्। तिरश्ची। तिर्यचि। पूजायांतु। तिर्यङ्। तिर्यची। तिर्यचि। यकृत्। ॐ श्री श्री श्री

२५

भ्यां। उह्यिश्चु। द्योः। दिवो। दिवः। द्युभ्यां। द्युभ्यु। गीः। गिरो। गिरः। एवंपूः। चतुरश्वतस्त्वादेशः। चतस्रः। चतस्रणां। कि  
मः। कोदेशेटाप्। का। के। काः। सर्ववत्। यः। सो। इदमोदस्ययः। स्यात्ते। इदमोमः। इयं। त्यदाद्यत्वं। टाप्। दश्वेतिमः।  
इमे। इमाः। इमां। इमे। इमाः। अनया। हलिलोपः। आभ्यां। आभिः। अत्ये। अस्याः। अनयोः। आसां। अस्यां। आसु।  
अन्वादेशेत्तु। एनां। एने। एनाः। एनया। एनयोः। अस्त्रिणादिनासृजेःक्विन्। अमागमश्चनिपातितः। स्रक्। स्रग्र। स्रजो।  
स्रग्रभ्यां। स्रश्चु। त्यदाद्यत्वं। टाप्। स्या। स्येत्याः। एवंतद्। यद्। एतद्। वाक्। वाग्र। वाचो। वाचः। वाभ्यां। वाश्चु। अप्रशब्दे  
नित्यंबडुवचनांतः। अस्तन्नितिदीर्घः। आपः। अपः। अयोभि। अपस्तकारः। स्याद्भकारादौप्रत्ययेपरे। अडिः। अड्यः।  
अपां। अप्सु। दिक्। दिग्र। दिशो। दिग्भ्यां। दिश्चु। त्यदादिद्वितिदृशेःक्विन्विधानात्। अन्यत्रापिकुत्वं। दृक्। दृग्र। दृशो।  
दृशः। त्विद्। त्विड्। त्विषो। त्विषः। त्विड्भ्यां। त्विड्सु। सहजुषतइतिसज्जुः। सज्जुषो। सज्जुभ्यां। सज्जुः। आशीः। आ  
शिषो। असे। त्यदाद्यत्वं। टाप्। ओडः। शी। उत्वमत्वो। अम्। अमुं। अमुया। अमूभ्यां। अमूभिः। अमूष्ये। अमूष्याः।